संस्कृत साहित्य साधना

डॉ. शान्ति लाल सालवी

4.7 प्रसन्नराघव और अनर्घराघव नाटक में रीतियाँ — 130–139
रमेशचन्द्र सालवी

4.8 संस्कृत साहित्य में रूपक एक अनुशीलन — 140–147
किरन प्रकाश

पंचम अध्याय : काव्यशास्त्र विषयक चिन्तन — **148–222**

5.1 कारणभेद से काव्यभेद एक दार्शनिक दृष्टि — 148–177
डॉ0 शशिकान्त द्विवेदी

5.2 रीति की अवधारणा — 178–182
डॉ0 शान्ति लाल सालवी

5.3 काव्यादर्श में प्रहेलिकाएँ — 183–192
डॉ0 संजय कुमार

5.4 काव्यशास्त्र में रसतत्त्व विमर्श — 193–200
डॉ0 गटु लाल पाटीदार

5.5 हास्यरस : एक विमर्श — 201–207
डॉ0 स्मिता शर्मा

5.6 साहित्यशास्त्राभिमतलक्षणा–लक्षणम्, लक्षणाहेतुश्च — 208–214
डॉ0 सुभद्रा कुमारी

5.7 भरत मुनि का रससूत्र — 215–222
रामजीत यादव

षष्ठ अध्याय : आधुनिक संस्कृत साहित्य चिन्तन — **223–244**

6.1 मत्स्यांचल का संस्कृत स्तोत्रसाहित्य — 223–231
प्रो0 नीरज शर्मा

6.2 Abhijnanashakuntalam and Hamlet: A Comparative View — 232–244
Dr. Rajneesh Pandey

सप्तम अध्याय : विविध विषयक चिन्तन — **245–312**

7.1 अद्वैतचित् — 245–283
डॉ0 सरोज कुमार पाढी

7.2 भारतीय संविधान की उद्देशिका के मूलभूत तत्त्व — 284–293
डॉ0 रामहेत गौतम

7.3 'लिप्यतीव' इत्यादि तिङन्त से बोध्य क्रियारूप धर्म की उत्प्रेक्षा की उत्प्रेक्षा के स्थल में त्रिविध शाब्दबोध वैयाकरणमते — 294–304
डॉ0 जगदीश प्रसाद जाट:

7.4 छन्दःसमीक्षा में निरूपित प्रस्तार–प्रत्यय विवेचन : एक अनुशीलन — 305–312
ज्योत्सना यादव

5.3 काव्यादर्श में प्रहेलिकाएँ

डॉ0 संजय कुमार*

प्रहेलिका स्वयं एक प्रश्न होती है, जो साधारण होते हुए भी अपने भीतर एक गूढ़ार्थ छिपाए रहती है। विकास की आरंभिक अवस्था में मानव ने जब अपने चतुर्दिक प्रकृति व्यापारों को देखा होगा तो उस समय उसे समस्त प्रकृतिव्यापार एक प्रहेलिका ही लगी होगी। ज्ञान–विज्ञान, गुरुता और परिपक्वता के साथ प्रकृतिव्यापारों की इन उपलब्धियों की अभिव्यक्ति हुई होगी और वाणी द्वारा अभिव्यक्त साहित्य का यह रूप भी प्रहेलिका के ही रूप में व्यक्त होकर तर्क–वितर्क सहित प्रश्नकर्ता द्वारा स्वयं समस्या का समाधान हुआ होगा। इस प्रकार मनुष्य की गोपनीय प्रवृत्ति ही प्रहेलिकाओं की उत्पत्ति का कारण हैं। किसी बात को गुप्त रखकर वर्णन करना ही प्रहेलिका है। प्रहेलिका[1] का अर्थ है– 'पहेली या वुझौवल'। इसमें किसी तथ्य को छिपाने के लिए पहेली बुझाई जाती है। यह काव्य क्षेत्र का अलंकार न होकर गोष्ठियों का चमत्कार होता है, जिसका प्रयोग मनोरंजन या मनोविनोद के लिए, गोष्ठियों में किसी को मूर्ख बनाने या चक्कर में डालने के लिए, विनोद के निमित्त अथवा किसी गोपनीय या गुह्य तथ्य को छिपाकर रखने के लिए ही होता है। 'डॉ. फेजर' का मत है "पहेलियों की रचना उस समय हुई होगी, जब कुछ कारणों से वक्ता को स्पष्ट शब्दों में किसी बात को कहने में किसी प्रकार की अड़चन पैदा हुई होगी।"[2] इसके लिए कुछ पद का भी प्रयोग किया जाता है। पहेली की उत्पत्ति का कारण बुद्धि परीक्षा भी है।[3] वैदिक काल से ही इसके प्रचलन का प्रमाण मिलता है। "इस काल का ब्रह्मोदय– अश्वमेधयज्ञ, अनुष्ठान का ही अंग था। वलि से पूर्व ब्राह्मण ब्रह्मोदय (पहेली) पूछता था।[4] अतः ब्रह्मोदय का आनुष्ठानिक प्रयोग समस्त विश्व में था। महाभारत में भी यक्ष–युधिष्ठिर संवाद पहेलियों के अस्तित्व की ओर संकेत करता है।[5] इस प्रकार प्रहेलिका का अस्तित्व अत्यन्त प्राचीन समय से ही चला आ रहा है।

---

*सहायक–आचार्य, संस्कृत विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)